सं. भो.वि./जी.जी.एन./77-,85/46.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. 1. परिवहन श्रायुक्त हरियाणा चण्डीगढ़, 2. जनरल मैनेजर सैन्ट्रल वाडी बिल्डिंग वर्कशाप गुडगांवा, के श्रमिक श्री रमेश चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामल में कोई घौद्योगिक विधाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस्लिये, अब, श्रौधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी ने लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट क्रेरते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत था सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रमेश चन्द सपुत महिपाल सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा टीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्री वि वि । तथा उस के प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर व्ि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट कुरना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम|78|32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री नेता राम सपुत्र श्री धर्म सिंह की सेवाग्रों का समापन/संस्था के हाजरी रिजस्टर से नाम काटन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 2 जनवरी, 1986

सं श्रो वि वि | पानी | 85-85 | 30 1. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वि नगर सुधार मण्डल (भंग), पानीपत, के श्रीमक श्री राम तस गर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ब्रब, ब्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3 (44) 84—3—अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के ब्रधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्वाला, को विवादमस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद- ग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री राम दास शर्मा सुपुत्र श्री छोटा राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 3 जनवरी, 1986

सं ब्रो वि । एफ बी । गुडगांवा / 25-85 | 556. -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) हरियाणा राज्य परिवहन ब्रायुक्त, चन्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेंजर, बाड़ी बिल्डिंग वर्कणाप, रिवाडी, के श्रमिक श्री राम कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद हैं;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रन, ग्रांशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रांकितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1970, के साथ प्रदते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विदादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेन् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम शुमार सुपुत्र लीला राम की सेवाओं "का समापन न्याबोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?